IJAER/July-August 2024/Volume-13/Issue-4 ISSN: 2278-9677
International Journal of Arts & Education Research
(Peer-Reviewed, Open Access, Fully Refereed International Journal) Impact Factor:7.06

कशीदाकारी का इतिहास एवं विकास

शालिनी आल्हा
सह आचार्य
चौ. ब.रा.गो.राज.कन्या महाविद्यालय
श्रीगंगानगर

परिचय :–

कढ़ाई या कशीदाकारी एक विशिष्ट कला है, जो विभिन्न प्रकार के वस्त्रों पर सुई व धागे के साथ विभिन्न तरीकों व विधियों से की जाती है। यह सजावटी प्रक्रिया में से एक है, जिससे कपड़े सजाये जाते हैं। भारत में कढ़ाई प्राचीन समय से की जा रही है। इसके साक्ष्य वेदों व दूसरे प्राचीन साहित्य में भी मिलते हैं। कशीदाकारी भारत की सांस्कृतिक धरोहर का महत्त्वपूर्ण हिस्सा है। भारतीय कढ़ाई भारत के परम्पराओं व रीति–रिवाजों से विकसित हुई है। जिस तरह भारत में बहुत प्रकार की जलवायु है, जीव–जन्तु है, उसी तरह यहाँ के लोगों के अलग–अलग खानपान व रहन–सहन है। उनके वस्त्र व आभूषण हैं तथा अलग–अलग रूचियाँ व मान्यताएँ है। उन सब चीजों ने यहाँ के वस्त्रों में विभिन्नता पैदा की है।

मुख्य शब्द : कशीदाकारी, डिजाइन, परम्परा, परिवर्तन, सांस्कृतिक, धरोहर।

बहुत सी दूसरी कलाओं की तरह किसानों व कबीलों में खास तौर पर घुमंतु जातियों ने कढ़ाई के विकास में काफी योगदान दिया है। क्योंकि यह कला अत्यधिक समय की माँग करती थी इस कारण यह खाली समय में ही बनाई जा सकती थी और किसानों के पास एक पूरे समय तक जब पैदावार करने का मौसम नहीं होता था तब उनके पास कुछ काम करने के लिए नहीं था और वह अपने खाली समय का सदुपयोग कढ़ाई करने में व्यतीत करते थे। घुमने वाले घुमंतु समुदाय के पास भी काफी समय होता था। जिसके कारण उन्हें कढ़ाई करने का काफी समय मिल जाता था।

पहले शुद्ध सोने व चाँदी के धागों से कढ़ाई की जाती थी। रत्न व दूसरी कीमती धातुएँ भी काफी इस्तेमाल की जाती थी। मोती, काँच के टुकड़े, शेल और दूसरी सस्ती चीजें इनके स्थान पर कम धनी लोगों के लिए उपलब्ध करवाई गई। अगर ये कहा जाए तो अतिश्योक्ति नहीं होगी कि विश्व में पाई जाने वाली सभी तरह की कढ़ाई भारत में ही की जाती थी। लेकिन जिस तरीके से भारत में इन्हें बनाया जाता है। इनमें खास भारतीय गुण आ जाते हैं। मुख्यतः कढ़ाई के लिए प्रेरणा दैनिक जीवन, प्राकृतिक सौंदर्य, लोक कथाओं, पौराणिक कथाओं व धार्मिक ग्रंथों से ली जाती है।

1. प्राचीन भारत में कढ़ाई कला :–

बहुत से उदाहरण हैं जिनसे सिद्ध होता है कि भारत में कढ़ाई 5000–2500 ई.पू. भी की जाती थी। 2300–1500 ई.पू. के बीच की कांस्य से बनी कढ़ाई की सुइयाँ भी मिली हैं। उस समय में खास तौर पर कढ़ाई उत्तर पश्चिमी क्षेत्रों में की जाती थी। जिसमें सिंधू घाटी व थार मरूस्थल शामिल है। मोहनजोदडो में कढ़ाई काफी विकसित थी। जिसका

सबूत है खुदाई में मिली पुजारी की मूर्ति जिसने कढ़ाई की हुई शॉल पहनी है। अजन्ता एलोरा की गुफाओं में कढ़ाई किए हुए घाघरा–धोती पहने हुए मानव आकृति देखी जा सकती है जो शायद 600 ई.पू. की है। गुप्तकाल की व कालिदास के साहित्य में भी कढ़ाई के अनेक उदाहरण मिले हैं। जब सिकन्दर भारत आया था तब भारत में बहुत सुन्दर कढ़ाई के वस्त्र मिलते थे। जरदोजी वाले वस्त्र यूनान व ग्रीस में निर्यात किए जाते थे। इस बात की लिखित प्रमाण भी मिलते हैं कि 300 ई.पू. भारत में धनी व्यक्ति बहुत भारी कढ़ाई वाले वस्त्र पहनते थे।

2. मध्य युग :–

भारत एशिया के पुराने व्यापार मार्गों पर था। इसके कारण विश्व की बहुत सी संस्कृतियाँ व धर्मों ने भारत को प्रभावित किया है। पश्चिम से अफगान व फारसी व्यापारी आए तो पूर्व से चीन की वस्त्र कलाओं का प्रभाव दिखाई देता है। पुराने रेशम मार्ग के जरिए भारत में चीन की कलाएँ आयी। भारत के नक्शे में एक बहुत बड़ा तटीय क्षेत्र होन के कारण भारत का व्यापार कई देशों से हुआ है। जिसमें मुख्यतः है पुर्तगाली, डच, फ्रेंच व ब्रिटिश। इन्होंने भारतीय कलाओं को प्रभावित किया। गुजरात व बंगाल से यूरोपियन कम्पनी ने सैंकड़ों सालों तक बहुत मात्रा में कढ़ाई किए हुए वस्त्र निर्यात किए।

3. मुस्लिम प्रभाव :–

भारतीय कढ़ाई कला सबसे ज्यादा पर्शियन शैलियों से प्रभावित हुई है। यह पर्शियन भारत में सोलहवीं शताब्दी में मुस्लिम आक्रमणकारियों के साथ ही आए। मुगलों ने कढ़ाई की बड़ी बड़ी कार्यशालाएँ स्थापित की। जहाँ पर स्थानीय व पर्शियन शैलियों का विकास हुआ। इस समय प्राकृतिक दृश्य कढ़ाई के डिजाइन मुख्य हिस्सा बने। जिसमें विभिन्न प्रकार के फूल, पत्ती, पौधे, पेड़ शामिल थे। इस काल में डिजाइन में ज्यादातर शिकार के दृश्य दिखाई देते थे। हँस की आकृति भी देखने को मिलती थी। भारतीय कढ़ाई किए हुए वस्त्रों का सबसे पुराना सुरक्षित टुकड़ा 15–16 वीं शताब्दी के बीच का है।

4. ब्रिटिश काल :–

जब सबसे पहले अंग्रेज गुजरात के सूरत इलाके में पहुँचे तो उस समय सूरत की कढ़ाई बहुत प्रचलित थी। इन वस्त्रों की प्रदेश व विदेश में काफी माँग थी। अंग्रेजों ने इनका निर्यात करना शुरू किया। भारत में खूबसूरत वह बहुमूल्य कढ़ाई के नमूने यूरोप के देशों के संग्रहलायों में देखे जा सकते हैं। 16–17 शताब्दी के कुछ वस्त्र इंग्लैण्ड के हार्डविक हॉल्ड, अल्बर्ट, विक्टोरिया के संग्रहलाय में देखे जा सकते हैं। 17 वीं शताब्दी के बाद के नमूने ज्यादा संख्या में उपलब्ध हैं। 18–19 शताब्दी में जो अंग्रेज भारत में थे, उन्होंने भारतीय कढ़ाई के कलेक्शंस तैयार बनाए और यूरोप भेजे। उस कलेक्शन वॉल्यूम्स आज भी इंग्लैण्ड की पुस्तकालयों में देखी जा सकती है। इन संग्रहों को बनाने का उद्देश्य था–

1. अंग्रेजी उत्पादकों को यह जानकारी देना की किस तरह की माँग है ताकि वो उन कपड़ों नकल कर सकें और भारत में निर्यात कर सके।
2. उस काल की भारतीय कलाओं का संग्रह तैयार करना।

परम्परागत रूप से भारत में कढ़ाई के वस्त्रों का उत्पादन निजी व घरेलू उपयोग के लिए होता था। लेकिन यूरोपिय माँग के फलस्वरूप व्यवसायिक उत्पादन शुरू हुआ। माँग के आधार पर विभिन्न उत्पाद बनाये जाते थे। यूरोपियन रहन सहन इस तरह का था कि वो लोग कमरे की सजावट पर काफी खर्च करते थे। इसलिए चद्दर, मेजपोश, वॉलहैगिंग की काफी माँग थी। यह माँग गुजराती व बंगाली कारीगरों द्वारा पूरी की जाती थी। यूरोपिय देशों के आने से भारत में कढ़ाई के डिजाइन भी प्रभावित हुए। उदाहरण के लिए समुद्री जहाज, जहाजी व यूरोपियन यात्री कुछ डिजाइन में देखे जा सकते हैं।

5. आधुनिक काल :–

भारत में औद्योगिक क्रान्ति के बाद कढ़ाई में बहुत सारे बदलाव आए। पहले हस्त निर्मित कपड़ा इस्तेमाल किए जाते थे और अब संश्लेषित रेशों से बना हुआ कपड़ा उपयोग में लाया जाता है। क्योंकि ये कपड़े सस्ते व महीन रचना के होते हैं। मानव कृत रेशों के आने के बाद उनसे बना कपड़ा व कढ़ाई के धागे भी इस्तेमाल होने लगे। संश्लेषित रंगों ने प्राकृतिक रंगों का स्थान ले लिया। क्योंकि ये सस्ते, चमकदार और इस्तेमाल करने में आसान थे इसलिए ये रंग ज्यादा प्रयोग में लाए जाते थे।

निष्कर्ष :–

इतने बदलावों के बावजूद भी भारत के हर राज्य विशेष ने कढ़ाई में अपना अलग स्थान बनाया है। अपनी संस्कृति, धर्म व परम्परा के अनुसार आज भी निर्यात करने के लिए माँग के अनुसार, खास उत्पाद बनाए जाते हैं। लेकिन समय के साथ–साथ आज हाथ की कढ़ाई, सजावट की नई तकनीक से प्रतियोगिता का सामना कर रही है। जैसे मशीनी कटाई, नई छपाई, अनेक सजावटी परिसज्जा इत्यादि। पहले कढ़ाई महिलाओं के लिए मनोरंजन और बहलाव का तरीका था। क्योंकि उस समय महिलाओं के लिए मनोरंजन के साधन बहुत कम थे। अब महिलाएँ बहुत से नए कार्यों में शामिल है और उनके पास इस कला के लिए वक्त कम है। पहले कढ़ाई उन जरूरी कलाओं में से एक थी। इसका धीमा उत्पादन उसे और भी महंगी बनाता है।

सन्दर्भ सूची :–

1. शर्मा, डॉ. डिम्पल, प्राचीन भारतीय कढ़ाई कला, नित्या प्रकाशन, भोपाल म.प्र.।

2. Jamila Brijbhushan, Indian Embroidery.

3- John Irwin and Hall Margaret, Indian Embroidery, V-II, Historic Textiles of India at the Calico Museum.

4- Warner Pamela, Embroidery : A History, Batsford Publication, 1991.

5- Jones, Mary Eirwen Jones, A History of Western Embroidery, Studio Vista Publisher, 1969.